पीएच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-संक्षेपिका

शोध-विषय

“कमलेश्वर के कथा साहित्य में निरूपित विविध आयाम: एक अध्ययन”

अध्ययन केंद्र

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा गुजरात

शोध-निर्देशक

डॉ.मोहम्मद अज़हर ढेरीवाला

हिन्दी विभाग,कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय

बड़ौदा गुजरात

शोधार्थी

शिव कैलाश यादव

हिन्दी विभाग,कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय

बड़ौदा गुजरात

पंजीकरण संख्या FOA/1449

तिथि 24/07/2017

जुलाई-2023

शोध-प्रबंध का संक्षिप्त विवरण/Executive Summary

किसी भी शोध कार्य के कुछ मुख्य उद्देश्य होते है। और अनुसंधान कार्य करने की अपनी पद्धति होती है। जिसके द्वारा शोध कार्य पूर्ण होता है। और शोध कार्य की समाज में उपादेयता क्या होगी यह भी उसके एक पक्ष होता है। इन बिन्दुयों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है-

शोध विषय की प्रेरक भावभूमि

साहित्य संवेदना के माध्यम से विचार तक या विचार के माध्यम से संवेदना तक पहुँचने की एक क्रिया है। यानि साहित्य मनुष्य को संवेदनशील व विचारवान दोनों ही बनाता है। इसके साथ ही साथ साहित्य पाठकों के भीतर समाज व मनुष्य जीवन से जुड़ी कई तरह की जिज्ञासा भी पैदा करता है। मेरे इस शोध कार्य की प्रेरक भावभूमि साहित्य का अध्ययन ही रहा है। स्नातक व परास्नातक में हिन्दी साहित्य को गंभीरता से पढ़ने व समझने का अवसर मिला। यही से साहित्य को और अधिक गहराई से समझने की जिज्ञासा हुई। साहित्य में व्यक्त संवेदना, विचार तथा साहित्य में समाया हुया व्यक्ति व समाज को समझने की जिज्ञासा हुयी। क्योंकि साहित्य को पढ़ते हुए उसमें वर्णित व्यक्ति हमारे आस-पास दिख जाता है। साहित्य में वर्णित समाज हमारे चारों तरफ का समाज दिखाई देता है। इस तरह से साहित्य हमें हमारे भीतर के परिवेश से लेकर बाहर के परिवेश से जोड़ देता है। यह बाहर भीतर का जुड़ाव तथा साहित्य में व्याप्त विचार, संवेदना तथा मनुष्य व समाज को समझने का प्रयास ही इस शोध कार्य की प्रेरणा भूमि है।

शोध विषय की सीमा रेखा

कमलेश्वर के रचनात्मक साहित्य में अभिव्यक्ति विविध आयामों का चयन इस शोध कार्य के लिए किया गया है। इस चयनित विषय के साथ हम न्याय कर सके। तथा कमलेश्वर के जो विचार है, उनको सही संदर्भों तक रख सके। उनका सही विश्लेषण हो सके। और इन सबके बीच तथ्यात्मकता व तार्किकता बनी रहे। यह कोशिश इस कार्य को करते हुए की गई है। यही इस शोध कार्य की सीमा रेखा है।

शोध का उद्देश्य

इस शोध कार्य का उद्देश्य कमलेश्वर के कथा साहित्य में वर्णित विविध पहलुओं के अध्ययन का है। तथा उनके साहित्य में वर्णित इन विविध पहलुओं को इस शोध कार्य के द्वारा मैं उजागर कर सके। उनको सही परिप्रेक्ष्य में संदर्भित कर सके। इसके साथ ही साहित्य लेखन में कमलेश्वर के योगदान, उनके साहित्यिक विचार, उनका समाज व मनुष्य के प्रति विचार क्या व

कैसे था। कमलेश्वर के लेखकीय जीवन के वैविध्य को समझ सकना, उनके बहुआयामी व्यक्तित्व में तथा उनके बहुआयामी साहित्य में व्याप्त विचार व संवेदनाओ को पकड़ सकना और उन्हे इस शोध कार्य में प्रस्तुत कर सकने का विनत प्रयास की इस शोध कार्य का उद्देश्य है।

शोध कार्य में प्रयुक्त अनुसंधान पद्धतियाँ

अनुसंधान पद्धति एक रणनीति प्रदान करती हैं जिसके द्वारा शोधकर्ता किसी घटना को समझने के लिए एक प्रक्रिया की योजना बना सकता है। यह एक अंतनिर्हित ढाँचा है। जो शोध को निर्देशित करता है। अपने द्वारा अपने शोध के लिए चुने गए, तरीकों के पीछे कुछ विचार होना चाहिए। अनुसंधान की विभिन्न पद्धति है उनमें से मैंने समीक्षात्मक पद्धति, अनुसंधान परक पद्धति, वर्णनात्मक पद्धति, विवरणात्मक पद्धति का प्रयोग किया है।

समीक्षापरक शोध का क्षेत्र बड़ा विशद है, साहित्य में जहाँ भी विश्लेषण है, जहाँ भी कृतित्व की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया गया है, वह समस्त कार्य इस कोटि में ग्राह्य है। इस शीर्षक के अनेक पर्याय प्राप्त होते हैं जैसे मूल्यांकन, विश्लेषण, विवेचन, आकलन, अनुशीलन, परिशीलन, एक अध्ययन आदि। समीक्षात्मक शोध, शोधार्थी की वैचारिक शक्ति और निर्णयात्मक धारणा का अधिकरण है। इसमें प्रतिप्राय विषय का सम्यक बोध प्रस्तुत किया जाता है। समीक्षात्मक शोध के प्रतिमान यद्यपि बहुत सुगढ़ और स्पष्ट नहीं है क्योंकि यह पद्धति प्रायः रुचि-वैचित्र्य, संवेदनाओं, भावों और वैयक्तिक धारणाओं पर निर्भर है। 'वर्णनात्मक अनुसंधान' समस्याओं में क्यों किस लिए की बजाये कैसे, क्या, कब, कहाँ जैसे प्रश्नों को हल करने के लिए उपयुक्त है। 'विवरणात्मक अनुसंधान' के अंतर्गत अध्ययन के समय जो परिस्थितियाँ हैं उनको उसी रूप में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसका उद्देश्य किसी परिस्थितियों तथा स्थितियों के संदर्भ में क्या पाया जाता है, उसका वर्णन करता है।

साहित्यिक अनुसंधान मे अनेक पद्धतियाँ होने के बावजूद शोध कार्य के लिए मुख्यतः समीक्षात्मक व विश्लेषणात्मक पद्धति का ही प्रयोग सर्वाधिक होता है। अतः मेरे शोध कार्य में भी मुख्यतः इसी पद्धति का प्रयोग किया है। जहाँ-तहां जरूरत के अनुसार अन्य पद्धतियों का भी सहारा लिया गया है।

शोध की प्रासंगिकता

किसी कार्य की प्रासंगिकता उसमें निहित मूल्यों पर निर्भर होती है। उसमें निहित सामाजिकता पर निर्भर होती है। और साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य का कार्य समाज के पथ प्रदर्शन का होता है। संवेदनहीनता, मूल्यहीनता व विनाशक हथियारों की होड में आगे बढ़ती हुई

दुनियाँ में संवेदना व मूल्यों का बचाना संवेदनशील साहित्य के जिम्मे ही यह बड़ी जिम्मेवारी है। कमलेश्वर के कथा साहित्य में संवेदना, मूल्यों, मनुष्यता आदि को बचाने की जो अपील है। उन सबकी जरूरत आज विश्व को और अधिक है। इस शोध कार्य में इन पक्षों पर बल है। क्योंकि इन सबसे ही मनुष्य व समाज संरक्षित है। वरना बर्बरता का प्रदर्शन आज विश्व कर ही रहा है। यूक्रेन व रशिया इसका प्रमाण है कि वहाँ मनुष्य की कीमत गोली बम बारुद पर न्यौछावर हो जाने की हो गई है। समाज में इस तरह की विचार न हो। मनुष्य संवेदनशील बना रहे। इन सबको का विनत प्रयास इस कार्य में किया गया है। इसमें यदि सहयोग हो सके तो कमलेश्वर के कथा साहित्य मे माध्यम से यही इस शोध कार्य की प्रासंगिकता होगी।

शोध-प्रबंध में विषयवस्तु का विवरण

अध्ययन की सामान्य सुविधा व शोध कार्य की वैज्ञानिकता को ध्यान में रख कर मैंने इस शोध कार्य को आठ अध्यायों में विभक्त किया है। और अंत में उपसंहार व परिशिष्ट में संदर्भ ग्रंथ सूची का विवरण प्रस्तुत किया है।

सामान्य मनुष्य के जीवन को, उसके संघर्ष को, उसकी संवेदना को, उसकी स्थितियाँ- परिस्थितियों को, उसके आर्थिक बदहाली को, छीड़ होती मनुष्यता को, टूटते संबंधों को, नए स्थापित संबंधों को तथा यथार्थ व युगबोध को अपने लेखन के केंद्र में स्थापित करने वाले, अपने वैचारिकी से जन सामान्य का प्रतिपक्ष रखने व रचने वाले, अपने लेखकीय दायित्व के प्रति सतर्क, सावधान व संवेदनशील, जिम्मेवार व प्रतिबद्ध कथाकार कमलेश्वर का जन्म 6 जनवरी 1932 ई. को उत्तर प्रदेश, मैनपुरी के कटरा कस्बा में एक सामान्य परिवार में हुआ था। कमलेश्वर के पिता जी का नाम जगदंबा प्रसाद सक्सेना था। पिता जगदंबा प्रसाद सक्सेना जी की दो शादियाँ हुई थी। जिसमें दूसरी पत्नी शांति देवी जी के कोख से होनहार बालक कमलेश्वर का जन्म हुआ था। माता शांति देवी बड़ी ही धार्मिक विचारों वाली व शांत स्वभाव की महिला था। जिन पर वैष्णव संस्कारों का पूर्ण प्रभाव था। माँ के वैष्णव विचारों का गहरा प्रभाव बालक कमलेश्वर पर भी पड़ा। माँ की छत्रछाया व स्नेह कमलेश्वर जी को भरपूर मिला, किन्तु पिता का साया इनके सर से बाल्यावस्था में ही उठ जाता हैं। पिता की मृत्यु के कुछ वर्षों के अंतराल पर बड़े भाई सिद्धार्थ भी इन्हे अकेला छोड़कर इस दुनिया से विदा हो जाते है। इस तरह कमलेश्वर बहुत कम उम्र में ही पिता व भाई के स्नेह से वंचित हो जाते हैं। इस स्नेहवंचना के साथ ही बालक कमलेश्वर पर घर की जिम्मेवारियों का भार आ गिरता है। यहाँ से छोटी उम्र में बड़ी जिम्मेवारियों के निर्वहन का दायित्व संभाल। और जैसा बन पड़ा उसे पूरी शिद्दत से आयी हुयी जिम्मेवारियों को कमलेश्वर उठाने की कोशिश करते हैं। फिर यह क्रम जीवन भर चलता रहा। और कमलेश्वर आर्थिक संघर्ष जीवन भर करते रहे। और सच को कहने, लिखते व बोलते रहे। अपने लेखकीय

जिम्मेवारियों का निर्वहन करते रहे। लोकतंत्र में लोकहित का प्रतिपक्ष रचते रहे। और कभी भी वे सत्ताकामी नहीं हुए। बल्कि सत्ता से टकराते रहे। उसके समक्ष डटकर खड़े रहे। उसके न्याय-अन्याय पर बोलते रहे। उनका किसी सत्ता से कोई राग- दद्वेष नहीं था। उनका राग और द्वेष सत और असत से था। और इसके ही पक्ष और प्रतिपक्ष को वे आजीवन लिखते रहे। उसमे रचते व बसते रहे। उसे बचाते व ध्वंस करते रहे। इस तरह कमलेश्वर का यह लेखकीय व्यक्तित्व बनाता है।

विभक्त अध्यायों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है-है। जिसमें प्रथम अध्याय है-

प्रथम अध्याय- कमलेश्वर जीवनवृत्त व कृतित्व। इस अध्याय के अंतर्गत कमलेश्वर के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। कमलेश्वर का व्यक्तित्व बहुआयामी व्यक्तित्व है। वे एक सफल कहानीकार, उपन्यासकार, संपादक, संवाद व पटकथा लेखक, आलोचक इत्यादि कई रूपों में वे सफलता अर्जित करते है। तथा इन सब रूपों के योग से निर्मित कमलेश्वर का व्यक्तित्व एक संयुक्त व्यक्तित्व है। लेकिन एक साहित्यकार के रूप में वे स्वयं को मूलतः कहानीकार मानते है। साहित्यिक दृष्टि से भी वे अत्यंत सफल व समृद्ध है। इनके साहित्य में सामान्य जनजीवन का यथार्थचित्रण प्राप्त होता है। वे अपने विचार तथा लेखकीय दायित्व से बदध प्रतिबद्ध साहित्यकार है।

कमलेश्वर का व्यक्तित्व अभिभूत कर देने वाला अदभुद व्यक्तित्व था। वे सहजता, सादगी, संजीदगी के जीवंत उदाहरण थे। जीवन में कई तरह की विविधता के साथ व्यस्तता रखते थे। एक साथ कई काम करना उनका जैसे व्यसन हो गया था। यही कारण है कि उनका लेखन एक रेखीय लेखन नहीं है। उसमें कई तरह की लड़ियाँ है। कई तरह की उछाह है। कई तरह के उसमे चिंतन है, विचार है, समाज का चित्र है, व्यक्ति का चित्र है। उनके लेखन का वलय वृत समाज की स्थितियाँ-परिस्थितियाँ व विसंगतियाँ थी। समय की गति में परिवर्तित होती समाज की प्रवृतियाँ है। मनुष्य व व्यक्ति की प्रवृतियाँ है। उनका लेखन एक बड़े साहित्यकार का विशाल लेखन है। लेकिन वह सिर्फ लेखन नहीं है बल्कि अपने समय का दस्तावेज भी है। जिसमें उनके समय की धड़कन है, उसका कोलाहल है, उसकी करुणा, उसकी वेदना है. उसका राग, उसका अनुराग है। व्यक्ति की विवशता व समाज का निखालिस यथार्थ रूप है। कृतित्व के संख्यात्मक, गुणात्मक व विधात्मक दृष्टि से भी कमलेश्वर अत्यंत सफल व समृद्ध साहित्यकार है।

द्वितीय अध्याय- के अंतर्गत "कमलेश्वर के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन व सामाजिक विसंगतियाँ का विश्लेषण किया गया है। इनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदियाँ, उसकी विसंगतियाँ, उसका तनाव, उसकी टूटन, घुटन, अकेलापन आदि का प्रामाणिक चित्रण इनके उपन्यासों में मिलता है।

भारतीय संस्कृति उदार है। मानवीय मूल्यों से सुशोभित है। त्याग समर्पण की भावना इसके स्वभाव में है। उच्च मानवीय गुणों की स्थापना भारतीय संस्कृति की मूल चेतना है। और यह जिम्मेवारी हर भारतीय की है वह अपने सभ्यता-संस्कृति के संरक्षण के लिए प्रयास करें। संस्कृति किसी भी देश की पहचान होती है। हम भारतीयों की पहचान अपने सांस्कृतिक मूल्यों के कारण पूरे विश्व में अद्‌वितीय है। अनेकता में एकता की भावना भारतीय संस्कृति का प्राण तत्त्व है। तमाम विरोधी व विषमताओं के बावजूद समरसता इसकी सास है। गंगा-जामुनी तहजीब को फलीभूत करना, इसके तमाम अंतद्‌वद्‌ध के ऊपर जीत है। और कमलेश्वर लगातार इस गंगा-जामुनी तहजीब को बचाने की लगातार कोशिश कर रहे है। इसके आत्मा को बचते हुए नजर आते है। एक साहित्यकार केरूप में यह दाय बहुत बड़ा दाय है। इस प्रकार निष्कर्ष हम कह सकते हैं कि कमलेश्वर जो कि स्वयं एक संस्कृति के अध्येता साहित्यकार हैं। तो उनके लेखन में संस्कृति के विविध पक्षों की गंभीर जांच पड़ताल करते की बात निकल कर सामने आती है। और वे अपनी संस्कृति की समृद्‌धि एवं उसकी रक्षा के लिए अपने लेखन में जगह दी है। संस्कृति के अक्षुण्ण परंपरा जैसे एकता, भाईचारा, सौहार्द जो मानवीय हुए उसे समृद्‌ध करने प्रेम को लगातार समृद्‌ध करने वाले तत्व हैं, उन पर उनका लगातार जोर बना रहा। और उनके साहित्य में संस्कृति की एक समृद्‌ध परंपरा विद्‌यमान है। वे संस्कृत के पोषक संस्कृति रक्षक एवं उसको विस्तार साहित्यकार हैं।

इस अध्याय के अंतर्गत कमलेश्वर के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन व उसकी विसंगतियों को रेखांकित किया गया है। मनुष्य का जीवन एक गतिशील जीवन है। उसके पास विचार की शक्ति है। और विचरों में भी मौलिक विचार की शक्ति है। और यह मौलकता उसे अपने परिवेश से प्राप्त होती है। और इससे ही समाज में नए तरह के विचारों का उदय होता है। इसी मौलिकता व विचारों के कारण समाज में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। और यह एक सतत प्रक्रिया है। यह मनुष्य के जीवन तक होती रहने वाली क्रिया है। लेकिन समय व समाज के अनुसार इसी मौलिकता व विचारों के दौरान कुछ ऐसे परिवर्तन भी आते है जो विकृति के तौर पर रेखांकित होते है। आगे चालकर यह विकृतियाँ भले ही हमारे समाज की हिस्सा बने और यह समय तक यह विकृतियाँ ही होती है। इस रूप में कमलेश्वर के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन व उसकी कई तरह की विकृतियों व विसंगतियों पर विचार किया गया है।

तृतीय अध्याय- में "कमलेश्वर के कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन व सामाजिक विसंगतियाँ" का अध्ययन किया गया है। कमलेश्वर की कहानियाँ आदर्श व कल्पना से दूर जीवन यथार्थ की कहानियाँ है। अपने आस पास की घटनाएं कमलेश्वर की कहानियों की विषयवस्तु है। जीवन को बिना किसी दुराव-छिपाव के भोगता हुआ मनुष्य उनकी कहानियों का पात्र है।

कमलेश्वर के यहाँ मध्यवर्गीय व्यक्ति घर-परिवार, पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, या पति-पत्नी के बीच प्रेमी-प्रेमिका, घर परिवार या अपनी आंतरिक टीसती हुई इच्छाओं का शिकार है। असक्त, थका-हारा, अकेलापन, अजनवीयत के साथ जिंदगी के छोटी-छोटी चीजों व बातों के लिए जद्दोजहद करने वाला आदमी है। अपने अस्तित्व के लिए लड़ता-जूझता आदमी है। कमलेश्वर का मध्यवर्ग अपने तक सीमित वर्ग है। वह स्वार्थी है। वह लालची है। और वह दीन-दुनियाँ में बहुत लिप्त आदमी नहीं है। इस करन वह अकेला भी बहुत है। और इसके साथ ही इसमे इच्छाएं बहुत है। और सबसे ज्यादा अधूरी इच्छाए है। यानि अधूरापन मध्यवर्ग का अपना खास अहसास है। और यह अधूरापन का अहसास उसे हमेशा कचोटता रहता है। यह उसके दर्द का सबसे बड़ा कारण है। सांस्कृतिक रूप से कमलेश्वर का ध्यान उन बातों की तरफ तो है जो बदल रही है, लेकिन वे सही है या गलत है इस पर वे निर्णय नहीं लेते है। स्थिति-परिस्थितियों का निरूपण कर सही गलत का निर्णय स्वतंत्रता रूप से पाठक पर छोड़ देते है। संस्कृति मनुष्य का एक हिस्सा है। संस्कृति हमें संस्कारित करती है। कमलेश्वर की सांस्कृतिक समझ मानवीय समझ है। कमलेश्वर का दृष्टिकोण चाहे सामाजिक, सास्कृतिक हो, राजनीतिक हो या धार्मिक हो सबमे मनुष्य व मनुष्यता सर्वोपरि है।

चतुर्थ अध्याय- के अंतर्गत कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व"। कमलेश्वर जिस दौर के लेखक है, वह दौर आधुनिकता व परंपरा के मध्य गहरी होड का समय है। समाज इन दोनों तरह की जीवन पद्धतियों के आगोश में था। जहां एक तरफ आधुनिकता की पकड़ मजबूत हो रही थी, वही परंपरागत जीवनधारा जीवन से पीछे छूट रही थी। इस तरह से समाज इन दोनों के दवन्द्व में था। जिसका चित्रण उपन्यासों के मध्य कमलेश्वर ने किया है। जिस पीढ़ी पर न तो समाज का दबाव है न ही परिवार का वह पीढ़ी कई बार अपने रास्ते से भटकी हुई नजर आती है। पुरानी पीढ़ी पर यदि समाज का दबाव होता है और नयी पीढ़ी पर परिवार का दबाव होता है। पुरानी पीढ़ी के लोग समाज के दबाव को नहीं तोड़ पाते है पर नयी पीढ़ी के लोग कई बार परिवार के दबाव को तोड़ कर उससे मुक्त हो जाते है। यह नयी व पुरानी पीढ़ी का अंतर है। कमलेश्वर के उपन्यासों में ज्यादातर आधुनिकता व परंपरा का प्रभाव हमें पारिवारिक या सामाजिक स्थितियों में ही देखने को मिलती है। आज रिश्ते हो, घर-परिवार हो या समाज हो हर किसी में परंपरा का निर्वहन भी है और आधुनिकता का समावेश भी है। इस निर्वहन व समावेश के मध्य ही इन दोनों के मध्य दद्वन्द्व समाहित है। और यह दो पीढ़ियों व दो विचार धाराओं का दवन्दव है। समाज, घर-परिवार, लोग, रिश्ते सबके सब इसके प्रभाव में है। सब पर इसका प्रभाव है।

पंचम अध्याय- में "कमलेश्वर के कहानियों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व। उपन्यास की भाति कमलेश्वर अपनी कहानियों में भी आधुनिकता व परंपरा के द्वन्द्व को प्रस्तुत किया है। इस अध्याय के अंतर्गत इनकी कहानियों में वर्णित आधुनिकता व परंपरा का विश्लेषण किया

गया है। कमलेश्वर की कहानियों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व कई दृष्टियों से उभरकर सामने आता है। लेकिन इस द्वन्द्व में कमलेश्वर कहीं भी संकीर्ण नहीं होते है। एक लेखक जो समाज को एक दिशा देता है। समाज को विचार देता है। उसे अपने समाज के अच्छे-बुरे की चिंता होरी है। वह एक स्वस्थ्य समाज के निर्माण की पक्षधरता करता है। तब वह किसी भी तरह के अतिवादों से बचता है। और तमाम अवरोधों के बावजूद वह अपने लेखन में एक संतुलन की दरकार करता है। कमलेश्वर भी यही करते है। समाज उस समय भी और आज भी कई तरह के अवरोधों से बधा हुआ है। लेकिन इन अवरोधों को न तो एक झटके में तोड़ा जा सकता है और न ही एक झटके में इनसे अलग हुआ जा सकता है। बल्कि इनके साथ हमे संतुलन बना कर चलना पड़ता है। और किसी बी द्वन्द्व की स्थिति में यही किया जाता रहा है। कमलेश्वर भी यह करते है।

षष्ठ अध्याय- में "कमलेश्वर विभाजन की त्रासदी"। विभाजन की समस्या को केंद्र में रखकर हिन्दी साहित्य में कई उपन्यासों व कहानियों का लेखन कार्य किया जा चुका है। चूंकि कमलेश्वर का समय विभाजन का समय है। और इसके दौरान जो अमानवीयता, जो पशुता समाज में फैली वह मनुष्य व मनुष्य समाज के लिए अत्यंत घातक है। विभाजन के दौरान इससे प्रभावित क्षेत्र में बर्बर पशुता का जन्म हुआ। इन मुद्दों को केंद्र में रखकर कमलेश्वर ने विश्व प्रसिद्ध उपन्यास कितने पाकिस्तान की रचना की।

विभाजन के संदर्भ में कमलेश्वर की प्रासंगिकता तब तक रहेगी जब तक इस दुनियाँ में नफरत व नफरत का कारोबार रहेगा। जब तक इस दुनियाँ में जाति, धर्म, मजहब, संप्रदाय के नाम पर लोगों का कत्ल होता रहेगा, जब तक धार्मिक सांप्रदायिक राजनीति होती रहेगी, जब तक धार्मिक सांप्रदायिक हत्याएं होती रहेगी, जब तक युद्ध व विश्व युद्ध होते रहेगे, जब तक वर्चस्व की लड़ाइयाँ चलती रहेगी, जब तक मनुष्य अमानवीय बर्बर होता रहेगा, जब तक विश्व में यूक्रेन-रशिया, तालिबान, रहेगा, जब तक किसी भी तरह के भेदभाव आधारित जोर-जुल्म, अत्याचार, दमन-शोषण,, हत्या, बलात्कार, लूट, आगजनी, बमबारी, परमाणु बम, अणुबम, और जब तक आततायी शक्तियों द्वारा स्त्रियों की अस्मत लूटी जाती रहेगी तब तक कमलेश्वर व कमलेश्वर जैसे लेखक व उनका लिखा हुआ साहित्य प्रासंगिक रहेगा। कितने पाकिस्तान विश्व में भाईचारे, एकता, समन्वय, सामंजस्य, प्रीति आदि को स्थापित करने की अपील करती हुई किताब है। विश्व से नफरत, द्वेष, ईर्ष्या, हत्या, लूट, बलात्कार, हिन्दू-मुस्लिम आदि का विरोध करती है। और वह मनुष्यता की बात करती है और जब विश्वस्तर पर जब लगातार मनुष्यता का ग्राफ गिर रहा हो तो ऐसे में इसकी अपील करने वाली किताब व लेखक निसन्देह प्रासंगिक व महत्वपूर्ण हो जाता है। और एक लेखक की एक उपलब्धि यह भी होती है कि वह किस प्रकार के कालखंड में प्रासंगिक व उपयोगी है। जब विश्व में एक तरह का नरसंहार मचा हुआ तो ऐसे में जब कोई लेखक उसके खिलाफ खड़ा हुआ नजर आता है तो वह लोगों को संबल देता हुआ नजर

आता है। और वह जितनी दूर तक और जब तक लोगों को संबल देता रहेगा तब तक प्रासंगिक रहेगा। कालजयी रचनाएं शाश्वत सत्य व मूल्यों पर लिखी गई होती है, इसलिए वे काल का अतिक्रमण कर कालजयी बन जाती है। कमलेश्वर इस अर्थ में कालजयी साहित्यकार है। और प्रासंगिक भी है।

सप्तम अध्याय- में "कमलेश्वर का नारी विषयक दृष्टिकोण"। आज का समय विमर्शों का समय है। साहित्य में कई तरह के विमर्श चल रहे है। इस आधार पर हमने कमलेश्वर के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श को तलाशने की कोशिश की है। और इस अध्याय के अंतर्गत यह देखने की कोशिश की है कि, कमलेश्वर के स्त्री संबंधी विचार व मान्यताएं क्या व कैसी थी।

कमलेश्वर के कथा साहित्य में स्त्री विषयक अनेक दृष्टिकोण मिलते है। कई बार वह बहुत r. परंपरागत विचार रखने वाली स्त्री तो कई बार एकदम आधुनिक ढंग की स्त्री है तो कई बार इन दोनों के मिलिजुली स्वभाव वाली स्त्री है। जैसे यदि हम देवा की माँ कहानी की बात करें तो देवा की माँ परंपरगत विचार रखने वाली स्त्री के रूप में हमरे सामने आती है। यानि उसका पति दूसरी शादी कर लिया है और इससे कोई वास्ता नहीं रखता है फिर भी देवा की माँ उसे ही अपना पति मानती है और अपना उसके नाम से सुहाग भी रखती है। यानि कि एक भोली-भाली साधारण सी स्त्री। और एकदम आधुनिक किस्म की स्त्री के तौर पर कई स्तरीय कमलेश्वर के कथा साहित्य में जैसे तीसरा आदमी की चित्रा, डाक बंगाल की इरा, समुद्र में खोया हुआ आदमी की तारा, काली आंधी की मालती, वही बात की समीरा, राजा निरबंसिया की चन्दा आदि लोक-लाज के डर भय से मुक्त है और अपने जीवन को जीना चाहती है बिना किसी कम से कम सामाजिक दबाव के या सामाजिक दबाव की निरर्थकता जैसे इनको पाला हो और ए उसे ठुकरा देती है। एक सड़क सत्तावन गालियां की बंसिरि वहत कुछ एक मिली जुली स्वभाव वाली स्त्री है। कहीं उसके मन में बहुत विद्रोह है तो कहीं किसी खोने में बहुत कुछ चुपचाप स्वीकार कर लेने का बोध भी उसमें है।

अष्टम व अंतिम अध्याय- के अंतर्गत 'कमलेश्वर भाषा व शिल्प" का अध्ययन किया गया है। भाषा साहित्य का प्राण होती है, जिसकी भाषा जितनी सरल होती है उसके पाठकवर्ग उससे उतने अधिक प्रभावित होते है। विचारों को व्यवस्थित करने का कार्य भाषा व शिल्प का है। विचारों को किस भाषा व किस शिल्प में रखा जाए। यह कार्य एक लेखक के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण होता है। कमलेश्वर के साहित्य का अध्ययन करते हुए हमने पाया कि कमलेश्वर की भाषा अत्यंत सरल, सरस व प्रभावशाली भाषा है। तथा शिल्प विधाओं के अनुरूप अत्यंत कसा हुआ है। कमलेश्वर जिस साहित्यिक रूप में अपनी बात रखते है, उस साहित्यिक रूप के भाषा व शिल्प की गहरी जानकारी व मजबूत पकड़ रखते है। यानी वे अपनी बात जिस रूप में कहना चाहते है। उस रूप में अपनी बात आसानी से और साधे रूप में कह जाते है। उनके

यहाँ शब्द विचलन नहीं है। अनावश्यक शब्दों का बोझ नहीं है। अर्थ के सहज गति में अवरोध उत्पन्न करने वाले गूढ शब्दों से लेखक लगातार बचने रहने का उद्योग किया है। भाषा दुरुहता से लगातार बची हुई और भावों के अनुरूप अपना रूप ग्रहण करती चलती है। जिससे इनकी भाषा में मुहावरों व लोकोक्तियों का का सहज प्रयोग, बिम्ब योजना मिलेगी, प्रतीक योजना मिलेगी, भाषा का चित्रात्मक रूप मिलेगा, कहीं भावपरक व विचारोत्तेजक भाषा का रूप मिलेगा, कहीं सूक्ति परक रूप मिलेगा, यह कमलेश्वर की भाषिक प्रवृतियों है।

उपसंहार- अंत में उपसंहार देते हुए शोध प्रबंध "कमलेश्वर के कथा साहित्य में निरूपित विविध आयामः एक अध्ययन संबंधी मान्यताओं एवं स्थापनाओं को प्रतिस्थापित करने का विनम प्रयास किया गया है। तथा शोध कार्य के महत्वपूर्ण बिन्दुयों को अत्यंत संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

हिन्दी साहित्य में कथा साहित्य के लेखन की शुरुआत साहित्य की एक बड़ी उपलब्धि है। क्योंकि हिन्दी साहित्य में कथा साहित्य के माध्यम से ही भावनात्मक काव्य के समानांतर विचारात्मक गद्य के लेखन का आरंभ होता है। गद्य के माध्यम से साहित्य में विचारों का प्रवेश एक बड़ी साहित्यिक क्रांति थी। इस वैचारिक क्रांति के साथ ही साहित्य के केंद्र में समाज, मनुष्य व उसके जीवन से जुड़े विविध दृष्टिकोण स्थापित होते है। और साहित्यकार समाज के आदर्श की अपेक्षा यथार्थ को चित्रित करने लगता है। समय के साथ यह प्रवृति लगातार सघन होती चली आयी और अन्य प्रवृतियाँ पीछे छूटती चली गयी। और धीरे-धीरे गद्य साहित्य में कई तरह की विचारधाराए व कई तरह के आंदोलन चल निकले। और आज का समय हिन्दी साहित्य में प्रवृतियों से अधिक विमर्शों का समय है। इन विमर्शों में आत्मकथा के बाद उपन्यास व कहानी का महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप है। लेकिन सबसे समृद्ध व चर्चित धारा उपन्यास व कहानी की ही रही। और इस धारा में अलग-अलग समय में अत्यंत समृद्ध अनेक साहित्यकार हुए। जिसमें एक प्रमुख नाम कमलेश्वर का भी है। जो अपने वैचारिकी व प्रतिबद्धता के लिए समर्पित साहित्यकार है। जहां वैचारिक, बौद्धिक व प्रतिबद्धतात्मक स्खलन बहुत तेज हो वहाँ पर प्रतिबद्धताओं के साथ टीके रहना कमलेश्वर जी की सबसे खास प्रवृति है।

कमलेश्वर जी का बचपन अत्यंत कष्टसाध्य बचपन है। उनका बचपन में अभाव, दुख, संघर्ष के अतिरिक्त कभी सुख या आराम नहीं देखा था। साथ ही वे समाज में व्याप्त विसंगतियों को अपने बचपन में देखा व उससे सीखा। निर्णय लेने की क्षमता व्यक्ति को जितना परिस्थितियाँ सिखाती है उतना कोई और नहीं। परिस्थितियाँ ही व्यक्ति को थपेड़े खिला कर वयस्क कर देती है। और अभाव व्यक्ति को समझ व निर्णय दोनों की शक्ति देता है। निर्णय लेने की क्षमता कमलेश्वर को इन्ही अभावों ने सिखाया। और वे अपने जीवन के हर मोड पर अपना निर्णय करते चले जाते है। पर उनके जीवन में बहुत लंबे समय तक या बहुत दूर तक अभाव,

यातना व उपेक्षाएं भी चलती रही। उनके प्रारम्भिक जीवन में अन्य तरह के भी अभाव चलते रहे, जैसे पढाई को लेकर या कपड़ों को लेकर या अन्य संसाधनों को लेकर हर जगह अभाव ही अभाव दिखता है। किन्तु कमलेश्वर अपने जीवन के अभाव व संघर्ष से कभी घबराते नहीं है बल्कि वे डटकर कर हर परिस्थिति का सामना करते चलते है। और इन सब जटिल परिस्थितियाँ से कमलेश्वर के व्यक्तित्व का जो निर्माण होता है, वह एक असाधारण व्यक्तित्व बन जाता है। जो अपने पर आ जाए तो चट्टान की तरह कठोर है और सरलता पर आ जाए तो पानी की तरह सरल है। उनका मनुष्य के प्रति विशेष अनुराग है। अपनो के प्रति स्नेह है। अपने लिए स्वाभिमान है। दूसरों की लड़ाई लड़ने का जज्बा है। सही व गलत को पहचानने की निष्पक्ष दृष्टि है। सही को सही व गलत को गलत कहने का अदम्य साहस है। अपने विचारों पर दृढ़ रहने का संकल्प है। अपने विचारों व लेखन की प्रतिबद्धता से उन्हे कोई समझौता नहीं है। प्रकृति से उन्हे अगाध प्रेम है। कर्तव्य व ईमानदारी उनके अपने मूल्य है। इन सब मूल्यों के मिश्रण से कमलेश्वर के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। जो निष्कपट व निष्कलुष है।

किसी भी लेखक या कलाकार कि सफलता का कारण उसका अपने विषय की दक्षता के साथ उसका सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक दृष्टि आदि के समझ पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। और साहित्य में सामाजिक मूल्यों के साथ साहित्यिक मूल्यों की प्रतिबद्धता किसी लेखक को अत्यधिक उचाइयाँ प्रदान करने में मदद करती है। कमलेश्वर अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्ध व प्रामाणिक लेखक है। अपने विचारों से वे कभी कोई सुलह समझौता नहीं करते है। वे लेखन में लेखक को विचारों के साथ प्रतिबद्ध होना ही लेखन की कसौटी मानते है। विचारों की फिसलन व लेखकीय विचारों से समझौता वे लेखक व विचार दोनों की मृत्यु मानते है। और बिना वैचारिक प्रीतिबद्धता के लेखन को वे लाभ पूर्ण लेखन मानते है। समाज से समस्याओं से असंबद्ध लेखन को वे निरर्थक लेखन मानते है। मूल्य रहित लेखन को वे लेखन नही मानते है, यही कारण है की वे कई बार अपने समकालीन लेखकों के लेखन का विरोध भी करते है और उसे वे वास्तविक लेखन नहीं मानते है। उसे वे अवास्तविक लेखन कहते है या लाभपूर्ण लेखन मानते है। पर वे अपने आपको साहित्य के प्रति जिम्मेदार मानते हुए प्रतिबद्ध बने रहते हैं। अपने लेखकीय दायित्वों के प्रति सतर्क व सावधान है। यह कमलेश्वर का लेखकीय व्यक्तित्व है।

भारतीय समाज सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से अत्यंत विविधताओं वाला समाज है। यहाँ हर समाज की अपनी सामाजिकता है और उसकी अपनी सांस्कृतिक पहचान है। साथ ही इस देश की सामाजिक व सांस्कृतिक बुनावट में गहरी समानताए व गहरी विषमताए भी व्याप्त है। जिसके कारण भारतीय समाज व संस्कृति में अनेकता में एकता दर्शन हमें होते है। यहाँ ग्रामीण, कस्बाई व नागर समाज व संस्कृति के अपने मान-मूल्य है। उनकी अपनी संरचना, उनकी अपनी खूबी व खामियाँ है। इसकी अपनी परम्पराएं है। इसकी अपनी रीति-रिवाज है। रुढ़ियाँ है। लेकिन

इन सबके उपरांत उत्सवधर्मिता भारतीय समाज व संस्कृति के वलय में स्थिति है। यह इसकी सबसे अलहदा पहचान है। यह सामाजिक व सांस्कृतिक दोनों है। और यह कई तरह के अंतर्विरोध के बावजूद भी है। मध्यवर्गीय जीवन व उसकी सामाजिक विसंगतियाँ भारतीय समाज में वक्षस्थल की भांति है। जीवन चेतना व सामाजिक विसंगति का निर्माण बहुत कुछ सामाजिक संरचना से निर्मित व उसी पर निर्भर है। सामाजिक संरचना से सामाजिक सोच का निर्माण भी होता है। और इसी सामाजिक संरचना से सामाजिक विसंगतियाँ भी उपजती है। चेतना का निर्माण सामाजिक परिवेश से होता है जबकि विसंगतियों का निर्माण सामाजिक भेद- भाव जनित होता है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में मनुष्य जीवन व समाज को केंद्र में रखकर उसकी समस्याओं पर गंभीर लेखन किया गया है। और परिवर्तित होती मनुष्य व समाज की प्रवृत्तियाँ उनके उपन्यासों में व्यक्त होती है। मनुष्य का जीवन एक गतिशील जीवन है। उसके पास विचार की शक्ति है। और विचरों में भी मौलिक विचार की शक्ति है। और यह मौलकता उसे अपने परिवेश से प्राप्त होती है। और इससे ही समाज में नए तरह के विचारों का उदय होता है। इसी मौलिकता व विचारों के कारण समाज में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। और यह एक सतत प्रक्रिया है। यह मनुष्य के जीवन पर्यंत होती रहने वाली क्रिया है। लेकिन समय व समाज के अनुसार इसी मौलिकता व विचारों के दौरान कुछ ऐसे परिवर्तन भी आते है जो विकृति के तौर पर रेखांकित होते हैं। आगे चलकर यह विकृतियाँ भले ही हमारे समाज की हिस्सा बने और हर समय यह विकृतियाँ होती रही है। इस रूप में कमलेश्वर के उपन्यासों में मनुष्य, समाज व परिवर्तित होती हुई उसकी प्रवृतियों का चित्रण प्राप्त होता है।

सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति की दृष्टि से कमलेश्वर की कहानियाँ में विविधता है। समाज के अलग-अलग कथ्यों को लेकर कमलेश्वर कहानियाँ लिखते है। लेकिन चेतना के स्तर पर वे मध्य व निम्न मध्यवर्ग की चेतना का प्रतिनिधितत्व करते है। कमलेश्वर में यह सामाजिक चेतना उनके प्रथम कहानी संग्रह राजा निरबंसिया से लेकर अंतिम कहानी संग्रह तक फैली हुई है। कमलेश्वर के यहाँ मध्यवर्गीय चेतना का जो रूप निकलकर सामने आता है वह एक कुंद चेतना है। जिसमे गतिशीलता का अभाव है। उसकी चेतना में गतिशीलता नहीं बल्कि रुढ़ियाँ ही रुढ़ियाँ खामोशी से फैली हुई है। और मध्यवर्गीय चेतना के दोहरे-तिहरे आयाम है। यह कभी बिल्कुल निर्णायक व बेबाक नहीं है। बल्कि वह लिजलीजी मानसिकता से भरा हुआ है। उसकी चेतना में वह निर्णायक शक्ति व कठोरता नहीं है जो उसे निर्णायक की स्थिति में स्थापित कर सके।

कमलेश्वर के कहानियों व उपन्यासों में आधुनिकता व परंपरा के द्वन्द्व का अध्ययन भी किया गया है। आधुनिकता के संदर्भ में अक्सर भारतीयों का यह मानना है कि यह पश्चिम

की चीज हैं। पश्चिम की विचारधारा है। यह पश्चिम से आयायित है। अगर यह बात सत्य है तो क्या हम यह मान ले कि भारत में कभी कोई नयी चीज, नयी बात व नये विचारों का उदय नहीं हुआ है। और भारत में जो कुछ भी नया है सब पश्चिम से आयातित है। यह भारत के ज्ञान-विज्ञान से लेकर चिंतन परंपरा उसके नवीन उद्भावना आदि पर एक प्रश्न चिन्ह हैं। और इसके साथ ही यह भी प्रश्न उठता है कि क्या भारत की समृद्ध ज्ञान-विज्ञान, चितन की परंपरा आधुनिक काल में आकर सूख जाती है। नहीं ऐसा बिल्कुल नहीं है। भारत की आधुनिकता भारत में ही विकसित हुई है। और इसके तमाम सबूत हमारे पास हैं। जैसे कि यदि हम सिंधु घाटी सभ्यता की बात करें तो यह सभ्यता अपने समय की सबसे उन्नत सभ्यता थी। विश्व में इससे ज्यादा विकसित दूसरी कोई सभ्यता नहीं थी। यह हमारी उन्नति का प्रतीक हैं। इसके बाद यदि हम कबीर नानक रैदास नामदेव गांधी टैगोर राजाराम मोहन राय विवेकानंद केशवचन्द सेन एनी बेसेंट अंबेडकर आदि महापुरुषों को देखे तो अपने समय में बड़े-बड़े परिवर्तन लाए। और कोई भी परिवर्तन समाज के सामाजिक संरचना के भीतर से ही होता हैं। और सब महापुरुष भारतीय समाज के संरचना के भीतर से ही परिवर्तन कर रहे है। उसके भीतर समय के साथ बदलते हुए नये विचारों का सृजन कर रहे है। समाज को नये विचारों से सुसज्जित कर रहे है। नयें समाज का निर्माण कर रहे है। यह सब किसी भी अर्थ में आधुनिकता से कम नहीं है। और ये सब जीतने भी महापुरुष है इन सबके विचार अपने मौलिक विचार है। या भारतीय ज्ञान परंपरा में जो सर्वश्रेष्ठ है उसे लोगों तक ले जाने का काम करते है। इन महापुरुषर्षो के द्वारा समाज में जो परिवर्तन लाया गया यह अपने आप में बहुत बड़ी आधुनिकता थी। और यही सच्ची भारतीय आधुनिकता है। इससे इतर पश्चिमी खान-पान, वेशभूषा, बात व्यवहार, जीवन के दूसरे पक्षों आदि का जो प्रभाव हम पर हुआ यह पश्चिम की बढ़ती हुई सभ्यता का प्रभाव है। इसे हम भारत की आधुनिकता का हिस्सा नहीं कह सकते। और यदि इसे ही हम भारत की आधुनिकता कहते है तो फिर हमारे महापुरुषों के द्वारा समाज में किए गए सुधार, भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा सब पर प्रश्न वाचक चिन्ह है कि फिर यह क्या है। या यह सब किसी काम का नहीं है। उसका कोई मूल्य नहीं है।

कमलेश्वर की कहानियों व उपन्यासों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व कई दृष्टियों से उभरकर सामने आता है। लेकिन इस द्वन्द्व में कमलेश्वर कहीं भी संकीर्ण नहीं होते है। एक लेखक जो समाज को एक दिशा देता है। समाज को विचार देता है। उसे अपने समाज के अच्छे-बुरे की चिंता होरी है। वह एक स्वस्थ्य समाज के निर्माण की पक्षधरता करता है। तब वह किसी भी तरह के अतिवादों से बचता है। और तमाम अवरोधों के बावजूद वह अपने लेखन में एक संतुलन की दरकार करता है। कमलेश्वर भी यही करते हैं। समाज उस समय भी और आज भी कई तरह के अवरोधों से बंधा हुआ है। लेकिन इन अवरोधों को न तो एक झटके में तोड़ा जा सकता है और न ही एक झटके में इनसे अलग हुआ जा सकता है। बल्कि इनके साथ हमे

संतुलन बना कर चलना पड़ता है। और किसी बी द्वन्द्व की स्थिति में यही किया जाता रहा है। कमलेश्वर भी यह करते है।

विभाजन के संदर्भ में कमलेश्वर की प्रासंगिकता तब तक रहेगी जब तक इस दुनियाँ में नफरत व नफरत का कारोबार रहेगा। जब तक इस दुनियाँ में जाति, धर्म, मजहब, संप्रदाय के नाम पर लोगों का कत्ल होता रहेगा, जब तक धार्मिक सांप्रदायिक राजनीति होती रहेगी, जब तक धार्मिक सांप्रदायिक हत्याएं होती रहेगी, जब तक युद्ध व विश्व युद्ध होते रहेगे, जब तक वर्चस्व की लड़ाइयाँ चलती रहेगी, जब तक मनुष्य अमानवीय बर्बर होता रहेगा, जब तक विश्व में यूक्रेन-रशिया, तालिबान, रहेगा, जब तक किसी भी तरह के भेदभाव आधारित जोर-जुल्म, अत्याचार, दमन-शोषण,, हत्या, बलात्कार, लूट, आगजनी, बमबारी, परमाणु बम, अणुबम, और जब तक आततायी शक्तियों द्वारा स्त्रियों की अस्मत लूटी जाती रहेगी तब तक कमलेश्वर व कमलेश्वर जैसे लेखक व उनका लिखा हुआ साहित्य प्रासंगिक रहेगा। कितने पाकिस्तान विश्व में भाईचारे, एकता, समन्वय, सामंजस्य, प्रीति आदि को स्थापित करने की अपील करती हुई किताब है। विश्व से नफरत, द्वेष, ईष्या, हत्या, लूट, बलात्कार, हिन्दू-मुस्लिम आदि का विरोध करती है। और वह मनुष्यता की बात करती है और जब विश्वस्तर पर लगातार मनुष्यता का ग्राफ गिर रहा हो तो ऐसे में इसकी अपील करने वाली किताब व लेखक निसन्देह प्रासंगिक व महत्वपूर्ण हो जाता है। और एक लेखक की उपलब्धि यह भी होती है कि वह किस प्रकार के कालखंड में प्रासंगिक व उपयोगी है। जब विश्व में एक तरह का नरसंहार मचा हुआ तो ऐसे में जब कोई लेखक उसके खिलाफ खड़ा हुआ नजर आता है तो वह लोगों को संबल देता हुआ नजर आता है। और वह जितनी दूर तक और जब तक लोगों को संबल देता रहेगा तब तक प्रासंगिक रहेगा। कालजयी रचनाएं शाश्वत सत्य व मूल्यों पर लिखी गई होती है, इसलिए वे काल का अतिक्रमण कर कालजयी बन जाती है। कमलेश्वर इस अर्थ में कालजयी साहित्यकार है। और प्रासंगिक भी है।

कमलेश्वर के कथा साहित्य में स्त्री विषयक अनेक दृष्टिकोण मिलले है। कई बार वह बहुत परंपरागत विचार रखने वाली स्त्री तो कई बार एकदम आधुनिक ढंग की स्त्री है तो कई बार इन दोनों के मिलिजुली स्वभाव वाली स्त्री है। जैसे यदि हम देवा की माँ कहानी की बात करे तो देवा की माँ परंपरागत विचार रखने वाली स्त्री के रूप में हमारे सामने आती है। यानि उसका पति दूसरी शादी कर लिया है और इससे कोई वास्ता नहीं रखता है फिर भी देवा की माँ उसे ही अपना पति मानती है और अपना उसके नाम से सुहाग भी रखती है। यानि कि एक भोली- भाली साधारण सी स्त्री। और एकदम आधुनिक किस्म की स्त्री के तौर पर कई स्तरीय कमलेश्वर के कथा साहित्य में जैसे तीसरा आदमी की चित्रा, डाक बंगाल की इरा, समुद्र में खोया हुआ आदमी की तारा, काली आंधी की मालती, वही बात की समीरा, राजा निरबंसिया की चन्दा आदि लोक-लाज के डर भय से मुक्त है और अपने जीवन को जीना चाहती है बिना

किसी कम से कम सामाजिक दबाव के या सामाजिक दबाव की निरर्थकता जैसे इनको पाता हो और ए उसे ठुकरा देती है। एक सड़क सत्तावन गालियां की बंसिरि बहुत कुछ एक मिली जुली स्वभाव वाली स्त्री है। कहीं उसके मन में बहुत विद्रोह है तो कहीं किसी खोने में बहुत कुछ चुपचाप स्वीकार कर लेने का बोध भी उसमे है।

इस तरह से कमलेश्वर के कथा साहित्य के विविध आयाों का अध्ययन इस शोध कार्य में किया गया है। कमलेश्वर के विचारों का सही विश्लेषण करने की कोशिश की गई है। उनकी बातों को, उनके विचारों को उसी संदर्भ में देखने, समझने व परखने की कोशिश है जिस रूप में कमलेश्वर उसे दिखाना चाहते है। अगर लेखन के मंतव्यों तक हम पहुँच सके हो और उसे सभी संदर्भ में रख सके हो तो यही इस शोध कार्य की सार्थकता होगी। और यही लेखक व शोधकार्य के साथ न्याय भी होगा। मैं अपनी तरफ से इस विचार को सार्थक करने की पूरी कोशिश की है। सफलता असफलता कितनी अर्जित हुई है। यह पठनीयता से तय हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची- उपसंहार के पश्चात संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत किया गया है। जिसके अंतर्गत आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ व पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020

कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018

नयी कहानी की भूमिका राजकमल प्रकाशन संस्करण 2015

कमलेश्वर गर्दिश के दिन राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 1980

कितने पाकिस्तान राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018

दस प्रतिनिधि कहानियाँ किताबघर प्रकाशन 2004

सहायक संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. करुणा शर्मा कमलेश्वर के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श नवचेतन प्रकाशन संस्करण 2011

2. डॉ. सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013

3. डॉ. वंदना अग्निहोत्री कमलेश्वर का रचना संसार पब्लिकेशन इंदौर प्रकाशन संस्करण 201

4. घनश्याम मधुप हिन्दी लघु उपन्यास राधाकृष्णन प्रकाशन संस्करण 1971

5. मधुकर सिंह कमलेश्वर शब्दकार प्रकाशन संस्करण 1977

6. डॉ. मिनी जार्ज कमलेश्वर का कथा साहित्यः समकालीन समस्याओं का जीवंत आलेख अमन प्रकाशन संस्करण 2013

7. डॉ. जागृति पाण्ड्या सातवें दशक के उपन्यासों में समसामयिक चेतना पैराडाइस प्रकाशन संस्करण 2014

8. सत्यप्रकाश मिश्रा सं. प्रेमचंद के श्रेष्ट निबंध लोकभारती प्रकाशन संस्करण 2013

9. शिवकमार मिश्र सांप्रदायिकता व हिन्दी उपन्यास वाणी प्रकाशन संस्करण 2015

10. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास लोकभारती प्रकाशन संस्करण 2012

11. रामचन्द्र तिवारी हिन्दी का गद्य-साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन संस्करण 2012

12. गोपेश्वर सिंह भक्ति आंदोलन और काव्य वाणी प्रकाशन संस्करण 2017

13. डॉ. पी. एम. थामस भारतीय मध्यवर्ग और सामाजिक उपन्यास जवाहर पुस्तकालय प्रकाशन संस्करण 1995

14. डॉ. नरेश कुमार यशपाल के कथा साहित्य और मध्यवर्ग संजय प्रकाशन संस्करण 2012

15. डॉ. श्याम सुंदर घोष भारतीय मध्यवर्ग लोकभारती प्रकाशन संस्करण 1979

16. पवन वर्मा भारत में मध्यवर्ग की अजीब दास्तान राजकमल प्रकाशन संस्करण 1999

17. डॉ. धीरजभाई वणकर कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ जान प्रकाशन सस्करण 2010

18. नामवर सिंह कहानीः नयी कहानी लोकभारती प्रकाशन संस्करण 2009

19. राजेन्द्र यादव कहानी स्वरूप और संवेदना वाणी प्रकाशन संस्करण 2007

20. डॉ. बच्चन सिंह हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास राधाकृष्ण प्रकाशन संस्करण 2016

21. गोपालराय हिन्दी कहानी का इतिहास राजकमल प्रकाशन संस्करण 2016

22. डॉ. हरदयाल हिन्दी कहानी परंपरा और प्रगति वाणी प्रकाशन संस्करण 2005

23. गोपालराय हिन्दी कहानी का इतिहास भाग दो राजकमल प्रकाशन संस्करण 2014

25. डॉ. अनिल प्रभाकर काबले नीरज माधव की कहानियों में मध्यवर्ग पराग प्रकाशन संस्करण 2021

26. डॉ. बादमसिंह रावतं सठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तु चेतना गिरीनार प्रकाशन संस्करण 1984

27. डॉ. एस. आर. श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013

28. डॉ. पी. ए. रघुराम समकालीन हिन्दी कविता और अस्मिता गोविंद पचौरी जवाहर

पुस्तकालय प्रकाशन संस्कख्पण 2012.

29. अनुज सेंगर रवींद्र कालिया के ए. बी. सी. डी. उपन्यास में आधुनिक चेतना निखिल प्रकाशन संस्करण 2016

30. माधुरी शाह कमलेश्वर का कथा साहित्य साहित्य रत्नालय प्रकाशन संस्करण 1982

31. अतुलवीर अरोड़ा आधुनिकता के संदर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास बालकृष्ण प्रकाशन संस्करण 1974

32. सं. विभूतिनरायण राय कथा साहित्य के सौ बरस शिल्पायन प्रकाशन संस्करण 2008

33. राजेगोरे राम विश्वम्भर कमलेश्वर कृति कितने पाकिस्तान एक अध्ययन ए. बी. एस. प्रकाशन संस्करण 2015

34. वीरेंद्र यादव उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता राजकमल प्रकाशन संस्करण 2017

35. यशपाल झूठा सच प्रथम खंड लोकभारती प्रकाशन संस्करण 2010

36. भीष्म साहनी तमस राजकमल प्रकाशन संस्करण 2019

37. राही मासूम रजा आधा गाँव राजकमल प्रकाशन संस्करण 2020

38. प्रदीप मांडव & अजय बिसारिया सं. विरासत के अलंबरदार कमलेश्वर लवली बुक्स प्रकाशन संस्करण 2012

39. डॉ. के. एम. मालती स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य वाणी प्रकाशन संस्करण 2017

40. डॉ. संतोष आर. नागुर मृणाल पाण्डेय के साहित्य में नारी विमर्श ए. बी. एस. प्रकाशन संस्करण 2018

पत्र-पत्रिकाएं

41. हंस पत्रिका

42. वागर्थ

43. नया ज्ञानोदय

44. मधुमती

45. भाषा

46. वीणा

47. तदभव

48. लमही